ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि एवं ग़ज़ल के छंद (पद्यभार आधारित पद्धति)

लघु-गुरु अक्षर - १

ल = लघुअक्षर

गा = गुरुअक्षर

ग़ज़ल के छंदों में एक गुरुअक्षर के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग किसी भी गुरुअक्षर के स्थान पर किया जा सकता है मगर एक गुरुअक्षर के स्थान पर स्पष्ट उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर नहीं किया जा सकता। हम संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों के लिए लल् संज्ञा का और स्पष्ट उच्चारवाले दो लघुअक्षरों के लिए लल संज्ञा का प्रयोग करेंगे।

लल् = संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग

लल = स्पष्ट उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग

लघु-गुरु अक्षर - २

ग़ज़ल के छंदशास्त्र के अनुसार पंक्ति (मिसरा) के अंत में आनेवाले लघुअक्षर को वज़न में अलग से न गिनते हुए उसे उससे पहलेवाले गुरुअक्षर में ही समाविष्ट कर दिया जाता है और उस लघुअक्षर को उसी गुरुअक्षर के साथ संयुक्त तरीक़े से ही उच्चारा जाता है। इससे यह निष्कर्ष निकाल सकते है कि ग़ज़ल के छंदों का अंत्याक्षर गुरुअक्षर ही होता है।

ग़ज़ल के छंदों में एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं होता। ग़ज़ल के प्रचलित होने में एक वजह ग़ज़ल के छंदों की प्रवाहिता भी है। एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग छंद की प्रवाहिता को कम कर देता है।

पद्यभार

किसी भी मात्रामेल रचना के पठन या गायन में कुछ जगह पर विशेष ठनकार या आघात का अनुभव किया जा सकता है, उस विशेष ठनकार या आघात को पद्यभार कहते हैं। मात्रामेल रचना में प्रयुक्त संधि के आधार से निश्चित कालांतर पर पद्यभार (विशेष ठनकार या आघात) की पुनरावृत्ति होती रहती है। पद्यभार (विशेष ठनकार या आघात) के स्थान के लिए ताल-स्थान या ताल शब्द का भी प्रयोग होता है, मगर संगीत की परिभाषा में ताल शब्द का अलग अर्थ में प्रयोग होने के कारन पद्यभार शब्द का ही प्रयोग करना ज़ियादा उचित होगा।

ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त हरेक संधि में दो तरह के पद्यभार होते है, मुख्य पद्यभार और गौण पद्यभार। पद्यभार (विशेष ठनकार या आघात) का वज़न गौण पद्यभार के मुक़ाबले मुख्य पद्यभार में ज़ियादा महसूस किया जा सकता है। छंदों के निरूपण के लिए मुख्य पद्यभार को ही ध्यान में लिया जाता है मगर एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट के लिए गौण पद्यभार को भी ध्यान में लिया जाता है। एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट उच्चारवाले लघुअक्षरों प्रयोग मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षरों के स्थान पर नहीं किया जा सकता।

मुख्य पद्यभारवाले अक्षर को रेखांकित करके दर्शाया गया है और गौण पद्यभारवाले अक्षर को नीचे बिंदी करके दर्शाया गया है।

संधि का प्रकार - १

क्रम	संधि का प्रकार	संधि की कुल मात्रा
१	पंचकल	५
२	षट्कल	६
३	सप्तकल	७
४	अष्टकल	८

संधि का पद्यभार और संगीत के ताल - १

जिस तरह संगीत-रचना में प्रवाहिता के लिए ताल ज़रूरी है उसी तरह ग़ज़ल-रचना में प्रवाहिता के लिए छंद ज़रूरी है और ग़ज़ल गेय काव्य का ही प्रकार है, इस वजह से ग़ज़ल के छंद और संगीत के ताल के बीच में सीधा संबंध स्थापित होता है। ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि का पद्यभार संगीत के ताल के आधार पर निश्चित किया जा सकता है। ग़ज़ल के छंद में प्रयुक्त संधि पंचकल, षट्कल, सप्तकल और अष्टकल प्रकार की हैं कि जिसका पद्यभार अनुक्रम से ताल झपताल (१० मात्रा), दादरा (६ मात्रा), रूपक (७ मात्रा) या दीपचन्दी (१४ मात्रा) और कहरवा (८ मात्रा) के प्रयोग से निश्चित किया जा सकता है।

संधि का पद्यभार और संगीत के ताल - २

संगीत की परिभाषा में किसी भी ताल की पहली मात्रा को 'सम' कहा जाता है। 'सम' किसी भी ताल की पहली और सब से ज़ियादा वज़नदार मात्रा होती है। अलग-अलग प्रकार की संधि के अनुरूप ताल का प्रयोग करके अलग-अलग प्रकार की मूल संधि को तथा मूल संधि के मुख्य और गौण पद्यभार को निश्चित किया जा सकता है। अलग-अलग प्रकार की मूल संधि तथा मूल संधि के मुख्य और गौण पद्यभार के आधार पर अलग-अलग प्रकार की सभी संधि को तथा उन सभी संधि के मुख्य और गौण पद्यभार को निश्चित किया जा सकता है।

संगीत के ताल के पहले खंड की पहली मात्रा (सम) के आधार पर मूल संधि का मुख्य पद्यभार निश्चित किया जा सकता है तथा ताल के दूसरे खंड की पहली मात्रा के आधार पर मूल संधि का गौण पद्यभार निश्चित किया जा सकता है।

संधि का प्रकार - २

१	मूल संधि	संगीत के ताल के आधार पर प्राप्त संधि कि जिसके पहले ही अक्षर पर मुख्य पद्यभार स्थापित रहता है उसे मूल संधि कहते हैं। मूल संधि का प्रयोग ग़ज़ल के छंदों में हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता।
२	मुख्य संधि	ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त संधि को मुख्य संधि कहते हैं। मुख्य संधि के आवर्तित स्वरूपवाले शुद्ध और मिश्र प्रकार के छंदों में रचनाएं पाई जाती है।
३	गौण संधि	मुख्य संधि के विकल्प के रूप में ही प्रयुक्त होनेवाली संधि को गौण संधि कहते हैं। गौण संधि के आवर्तित स्वरूपवाले छंदों में किसी रचना का मिलना बहोत ही मुश्किल है।

संधि का पद्यभार और संगीत के ताल - ३

सूचि में सभी संधि के मुख्य पद्यभारवाले अक्षर को रेखांकित करके दर्शाया गया है और गौण पद्यभारवाले अक्षर को नीचे बिंदी करके दर्शाया गया है।				
क्रम	संधि का प्रकार	संधि के अनुरूप संगीत का ताल	ताल के सम के आधार पर मूल संधि	मूल संधि के आधार पर प्राप्त मुख्य संधि और गौण संधि
१	पंचकल	झपताल	गाग़ाल	लगाग़ा ग़ालगा
२	षट्कल - १	दादरा	गालग़ाल या ग़ालगाल	लगालग़ा या लग़ालगा
	षट्कल - २	दादरा	गालल़गा	गागालल़ लल़गागा
३	सप्तकल	रूपक और दीपचन्दी	गालग़ागा तथा गालग़ालल	लग़ागागा गागालग़ा ग़ागागाल तथा लग़ाललगा ललगालग़ा ग़ाललगाल
४	अष्टकल - १	कहरवा	गागाग़ागा	गाललग़ागा गागाग़ालल गाललग़ालल लगालग़ागा गागाल़गाल
	अष्टकल - २	कहरवा	गागागाग़ा	ललगागाग़ा गागाललग़ा ललगाललग़ा गालगालग़ा

मुख्य पद्यभार और गौण पद्यभार का मात्रा अंतर

क्रमांक	संधि का प्रकार	मुख्य पद्यभार से गौण पद्यभार का मात्रा अंतर	गौण पद्यभार से मुख्य पद्यभार का मात्रा अंतर
१	पंचकल	२	३
२	षट्कल	३	३
३	सप्तकल	३	४
४	अष्टकल	४	४

कुछ अवलोकन

(०१)	किसी भी एक संधि के आवर्तित स्वरूप में भी दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षर एकसाथ नहीं आते।
(०२)	मुख्य पद्यभार और गौण पद्यभार दोनों लघुअक्षर पर ही स्थित हो ऐसी एक भी संधि ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त नहीं होती।
(०३)	जिस संधि में मुख्य या गौण पद्यभार लघुअक्षर पर स्थित हो उस संधि में मुख्य या गौण पद्यभारवाले लघुअक्षर के बाद गुरुअक्षर का ही प्रयोग हुआ है।
(०४)	किसी भी संधि में मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं हुआ है।
(०५)	हरेक पंचकल संधि में मुख्य पद्यभार से द्विकल संधि (गा) और गौण पद्यभार से त्रिकल संधि (गाल) को अलग किया जा सकता है।
(०६)	हरेक षट्कल संधि में मुख्य पद्यभार से त्रिकल संधि (गाल) और गौण पद्यभार से त्रिकल संधि (गाल या लगा) को अलग किया जा सकता है।
(०७)	हरेक सप्तकल संधि में मुख्य पद्यभार से त्रिकल संधि (गाल) और गौण पद्यभार से चतुष्कल संधि (गागा या गालल) को अलग किया जा सकता है।
(०८)	हरेक अष्टकल संधि में मुख्य पद्यभार से चतुष्कल संधि (गागा या गालल या लगाल) और गौण पद्यभार से चतुष्कल संधि (गागा या गालल या लगाल) को अलग किया जा सकता है।
(०९)	जिन अष्टकल संधि में दो लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त नहीं हुए हैं उन अष्टकल संधि में दो लघुअक्षरों के बीच में एक से अधिक गुरुअक्षर का प्रयोग नहीं हुआ है।
(१०)	अष्टकल संधि लगालग़ागा और गालगालग़ा में ही मुख्य पद्यभार लघुअक्षर पर स्थित है क्योंकि दोनों संधि अनुक्रम से अष्टकल संधि गागागाग़ागा और गागागागा़ के ही स्वरूप हैं।

ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त मुख्य संधि

संधि क्रमांक	ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त मुख्य संधि (अंत्याक्षर गुरुअक्षर)	संधि का प्रकार
०१	लगागा़	पंचकल
०२	गा़लगा	पंचकल
०३	लगालगा़ या लगा़लगा	षट्कल
०४	ल़गागा	षट्कल
०५	गाल़गा	षट्कल
०६	लगा़गागा	सप्तकल
०७	गालगा़गा	सप्तकल
०८	गागालगा़	सप्तकल
०९	ललगालगा़	सप्तकल
१०	लगा़लललगा	सप्तकल
११	गागागा़गा या गागागागा़	अष्टकल
१२	लगालगा़गा	अष्टकल

ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त गौण संधि - १

संधि क्रमांक	ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त गौण संधि (अंत्याक्षर गुरुअक्षर)	संधि का प्रकार
१	ललगागागा़	अष्टकल
२	गाललगा़गा	अष्टकल
३	गागाललगा़	अष्टकल
४	ललगाललगा़	अष्टकल
५	गालगालगा़	अष्टकल

ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त गौण संधि - २

संधि क्रमांक	ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त गौण संधि (अंत्याक्षर लघुअक्षर)	संधि का प्रकार
१	गालग़ालल	सप्तकल
२	गागाग़ालल	अष्टकल
३	गाललग़ालल	अष्टकल
४	गागाल़गाल	अष्टकल

ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त मुख्य संधि की वैकल्पिक संधि

संधि क्रमांक	ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त मुख्य संधि	वैकल्पिक संधि (अंत्याक्षर गुरुअक्षर)	वैकल्पिक संधि (अंत्याक्षर लघुअक्षर)
१	लग़ागागा	लग़ाललगा	*
२	गालग़ागा	*	गालग़ालल
३	गागालग़ा	ललगालग़ा	*
४	गागाग़ागा	लगालग़ागा गाललग़ागा	गागाग़ालल गाललग़ालल गागाल़गाल
५	गागागाग़ा	ललगागाग़ा गागाललग़ा ललगाललग़ा गालगालग़ा	*

वैकल्पिक संधि का प्रयोग

ग़ज़ल के छंदों में प्रयुक्त मुख्य संधि का और उसकी वैकल्पिक संधि का प्रयोग छंद-रचना में इस तरह से करना होगा कि छंद का अंत्याक्षर गुरुअक्षर ही आए। फिर भी एक गुरुअक्षर के स्थान पर दो स्पष्ट लघुअक्षरों के प्रयोग की छूट (वैकल्पिक संधि का प्रयोग) सिर्फ़ गागाग़ागा या गागागाग़ा संधि के प्रयोगवाले छंदों में ही मुख्य और गौण पद्यभार को ध्यान में रख कर इस तरह से लेनी चाहिए कि छंद का अंत्याक्षर गुरुअक्षर ही आए।

ग़ज़ल के छंदों के प्रकार

क्रम	छंद के प्रकार	
१	शुद्ध-अखंडित	किसी एक संधि के एक से अधिक आवर्तनों के प्रयोग से प्राप्त छंदों को शुद्ध-अखंडित प्रकार के छंद कहते हैं।
२	शुद्ध-खंडित	किसी एक संधि के एक से अधिक आवर्तनों के प्रयोग से प्राप्त स्वरूप की पहली संधि के पहले अक्षर/अक्षरों का या अंतिम संधि के अंतिम अक्षर/अक्षरों का लोप करने से प्राप्त छंदों को शुद्ध-खंडित प्रकार के छंद कहते हैं।
३	मिश्र-अखंडित	एक से अधिक संधि के मिश्र स्वरूप के एक आवर्तन के या एक से अधिक आवर्तनों के प्रयोग से प्राप्त छंदों को मिश्र-अखंडित प्रकार के छंद कहते हैं।
४	मिश्र-खंडित	एक से अधिक संधि के मिश्र स्वरूप के एक आवर्तन के या एक से अधिक आवर्तनों के प्रयोग से प्राप्त स्वरूप की पहली संधि के पहले अक्षर/अक्षरों का या अंतिम संधि के अंतिम अक्षर/अक्षरों का लोप करने से प्राप्त छंदों को मिश्र-खंडित प्रकार के छंद कहते हैं।
उपरोक्त क्रमांक २ और ४ के अनुसार प्राप्त छंदों के एक से अधिक आवर्तनों के प्रयोग से भी छंद-रचना की जा सकती है कि जिसको शुद्ध-खंडित या मिश्र-खंडित प्रकार के छंदों में वर्गीकृत किया जा सकता है।		

गुरुअक्षर

छंदों के निरूपण के लिए मुख्य पद्यभार को ही ध्यान में लिया जाता है मगर एक गुरुअक्षर के स्थान पर स्पष्ट उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का प्रयोग मुख्य और गौण पद्यभारवाले गुरुअक्षरों के स्थान पर नहीं किया जा सकता।

गा = गा या लल्

ग़ा = गा या लल्

गा = गा या लल् या लल

(ग़ज़ल के छंदों में एकसाथ दो से अधिक स्पष्ट लघुअक्षरों का प्रयोग नहीं होता।)

ग़ज़ल के प्रचलित छंद

अब मैं ग़ज़ल के कुछ प्रचलित छंदों की सूचि प्रस्तुत करता हूं कि जिसमें अंत्याक्षर गुरुअक्षर हो ऐसी मुख्य संधि क्रमांक १ से १२ का ही प्रयोग हुआ है। हरेक छंद में मुख्य पद्यभारवाले अक्षर को रेखांकित करके दर्शाया गया है और गौण पद्यभारवाले अक्षर को नीचे बिंदी करके दर्शाया गया है।

०१	लगागा़ लगागा़ लगागा़ लगागा़ तर्क-संगत नाम : ४लगागा़ प्रकार : शुद्ध-अखंडित
०२	लगागा़ लगागा़ लगागा़ लगा तर्क-संगत नाम : ४लगागा़-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
०३	लगागा़ लगागा़ लगागा़ लगागा़ लगागा़ लगागा़ लगागा़ लगागा़ तर्क-संगत नाम : ८लगागा़ प्रकार : शुद्ध-अखंडित
०४	ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा तर्क-संगत नाम : ४ग़ालगा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
०५	ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा गा़ तर्क-संगत नाम : ४ग़ालगा-लगा प्रकार : शुद्ध-खंडित
०६	ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा ग़ालगा तर्क-संगत नाम : ८ग़ालगा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
०७	लगालगा़ लगालगा़ लगालगा़ लगालगा़ तर्क-संगत नाम : ४लगालगा़ प्रकार : शुद्ध-अखंडित

०८	गालग़ा लगालग़ा गालग़ा लगालग़ा तर्क-संगत नाम : २(-ल+२लगालग़ा) प्रकार : शुद्ध-खंडित
०९	गागा लल़गागा लल़गागा लल़गागा तर्क-संगत नाम : -लल+४लल़गागा प्रकार : शुद्ध-खंडित
१०	लग़ागागा लग़ागागा लग़ागागा लग़ागागा तर्क-संगत नाम : ४लग़ागागा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
११	लग़ागागा लग़ागागा लग़ागा तर्क-संगत नाम : ३लग़ागागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
१२	गालग़ागा गालग़ागा गालग़ागा गालग़ा तर्क-संगत नाम : ४गालग़ागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
१३	गालग़ागा गालग़ागा गालग़ा तर्क-संगत नाम : ३गालग़ागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
१४	गालग़ागा गालग़ा गालग़ागा गालग़ा तर्क-संगत नाम : २(२गालग़ागा-गा) प्रकार : शुद्ध-खंडित
१५	गागालग़ा गागालग़ा गागालग़ा गागालग़ा तर्क-संगत नाम : ४गागालग़ा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
१६	ललगालग़ा ललगालग़ा ललगालग़ा ललगालग़ा तर्क-संगत नाम : ४ललगालग़ा प्रकार : शुद्ध-अखंडित

१७	लगालग़ागा लगालग़ागा लगालग़ागा लगालग़ागा तर्क-संगत नाम : ४लगालग़ागा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
१८	गागागाग़ा गागागाग़ा गागागाग़ा गागागाग़ा तर्क-संगत नाम : ४गागागाग़ा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
१९	गागाग़ागा गागाग़ागा गागाग़ागा गागाग़ा तर्क-संगत नाम : ४गागाग़ागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
२०	गागाग़ागा गागाग़ागा तर्क-संगत नाम : २गागाग़ागा प्रकार : शुद्ध-अखंडित
२१	गागाग़ागा गागाग़ा तर्क-संगत नाम : २गागाग़ागा-गा प्रकार : शुद्ध-खंडित
२२	गागागाग़ा गागा गागागाग़ा गागा तर्क-संगत नाम : २(२गागागाग़ा-गागा) प्रकार : शुद्ध-खंडित
२३	गागालग़ा लगाग़ा गागालग़ा लगाग़ा तर्क-संगत नाम : २(गागालग़ा+लगाग़ा) प्रकार : मिश्र-अखंडित
२४	ललगालग़ा लगाग़ा ललगालग़ा लगाग़ा तर्क-संगत नाम : २(ललगालग़ा+लगाग़ा) प्रकार : मिश्र-अखंडित
२५	गालल़गा लगालग़ा गालल़गा लगालग़ा तर्क-संगत नाम : २(गालल़गा+लगालग़ा) प्रकार : मिश्र-अखंडित

२६	**गागा लग़ालगा लल़गागा लग़ालगा** **तर्क-संगत नाम : -लल+२(लल़गागा+लग़ालगा)** **प्रकार : मिश्र-खंडित**
२७	**लग़ालगा लल़गागा लग़ालगा लल़गा** **तर्क-संगत नाम : २(लग़ालगा+लल़गागा)-गा** **प्रकार : मिश्र-खंडित**
२८	**गाल़गागा लल़गागा लल़गागा लल़गा** **तर्क-संगत नाम : ल+४लल़गागा-गा** **प्रकार : शुद्ध-खंडित**
२९	**गाल़गागा लल़गागा लल़गा** **तर्क-संगत नाम : ल+३लल़गागा-गा** **प्रकार : शुद्ध-खंडित**
३०	**गाल़गागा लग़ालगा लल़गा** **तर्क-संगत नाम : ल+लल़गागा+लग़ालगा+लल़गागा-गा** **प्रकार : मिश्र-खंडित**

छंद क्रमांक २७, २८, २९ और ३० में अंतिम संधि लल़गागा प्रयुक्त होती है और उस अंतिम संधि लल़गागा के अंतिम गुरुअक्षर का लोप करने से अंतिम संधि लल़गा प्राप्त होती है कि जिसमें दो स्पष्ट लघुअक्षरों के स्थान पर संयुक्त उच्चारवाले दो लघुअक्षरों का या एक गुरुअक्षर का प्रयोग करने की छूट है।

छंद क्रमांक २८, २९ और ३० में पहली संधि गाल़गागा प्रयुक्त होती है कि जिसका मुख्य पद्यभार संधि के पहले गुरुअक्षर (गालग़ागा) के बजाय संधि के अंतिम गुरुअक्षर (गाल़गागा) पर स्थित है। लल़गागा संधि की शुरूआत में एक लघुअक्षर बढ़ाने से ललल़गागा संधि प्राप्त होती है। ग़ज़ल के छंदों में दो से अधिक लघुअक्षर एकसाथ प्रयुक्त नहीं होते। इस आधार पर ललल़गागा संधि के पहले और दूसरे लघुअक्षरों को मिला कर एक गुरुअक्षर गिनने पर गाल़गागा संधि प्राप्त होती है कि जिसका मुख्य पद्यभार संधि के पहले गुरुअक्षर (गालग़ागा) के बजाय संधि के अंतिम गुरुअक्षर (गाल़गागा) पर स्थित है। गाल़गागा संधि कि जिसका मुख्य पद्यभार संधि के अंतिम गुरुअक्षर पर स्थित है उसका प्रयोग षट्कल संधि लल़गागा और लग़ालगा के साथ मिश्र रूप के जितना ही मर्यादित रहेगा। षट्कल संधि लल़गागा और लग़ालगा का मुख्य पद्यभार भी संधि के अंतिम गुरुअक्षर पर ही स्थित है।

लघुअक्षर की १ मात्रा और गुरुअक्षर की २ मात्रा गिनने पर छंद क्रमांक २५ के अलावा सभी अखंडित प्रकार के (शुद्ध और मिश्र दोनों) छंदों में मुख्य पद्यभार समान मात्रा के अंतर पर स्थित है और सभी खंडित प्रकार के (शुद्ध और मिश्र दोनों) छंदों में सिर्फ़ लोप के स्थान पर लोप किये हुए अक्षरों की मात्रा के जितनी ही मुख्य पद्यभार के अंतर में विषमता रहती है जो स्वीकार्य है। छंद क्रमांक २५ में संधि के मिश्रण के कारन मुख्य पद्यभार के अंतर में विषमता रहती है और इसीलिए उसमें मुख्य पद्यभार अनुक्रम से ७ और ५ मात्रा के अंतर पर स्थित है। जिस छंद में संधि के मिश्रण के कारन मुख्य पद्यभार के अंतर में विषमता जितनी ज़ियादा रहेगी उस छंद की प्रवाहिता और गेय-तत्व उतने ही कम होंगे और उस छंद के प्रचलित होने की संभावना भी उतनी ही कम हो जाएगी।

***

उदय शाह

दादाटडू स्ट्रीट (सांई स्ट्रीट)

नवसारी-३९६४४५ (गुजरात)

Phone : (R) 02637-255511 & (M) 09428882632

Email : udayshah_ghazaldhara@yahoo.in

Website : www.udayshahghazal.com

Visit my website www.udayshahghazal.com
to download my books and articles.